MR. CHAIRMAN: Hon. Members, as there are more than two names, I put the Motions moved to vote. I may like to inform the House that the Motions moved will now be taken up for adoption in the same sequence in which they have been moved. And, at any stage, if a Motion is carried, the remaining Motions will become infructuous and will not be put to the vote of the House. That is the procedure. I shall now put the Motion moved by Shri Jagat Prakash Nadda and duly seconded by Shri Thaawarchand Gehlot to vote.

The question is:

"That Shri Harivansh be chosen as the Deputy Chairman of the Rajya Sabha."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: Now I declare that Shri Harivansh has been chosen as the Deputy Chairman of Rajya Sabha. Shri Harivansh may be conducted to his seat by one from this side and one from the opposition. Now the Leaders can offer felicitations.

FELICITATIONS TO THE DEPUTY CHAIRMAN

नेता विरोधी दल (श्री गुलाम नबी आज़ाद): ऑनरेबल चेयरमैन सर, मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से श्री हरिवंश जी को डिप्टी चेयरमैन बनने पर बहुत-बहुत बधाई देता हूं। वे दूसरी दफा इस सदन के डिप्टी चेयरमैन बने हैं और पिछले कुछ सालों से हमने देखा है कि बहुत कम समय में इस पद पर रहकर उन्होंने सभी दलों के जो प्रतिनिधि इस सदन में हैं, उनके साथ न्याय करने का पूरा प्रयास किया है। वे बहुत ही बड़े विद्ववान हैं, लेखक हैं और जो इस फील्ड से आते हैं, उनके लिए सभी बराबर होते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में भी वे तीनों तरफ दाएं, बाएं और सेंटर पर ध्यान देंगे। आम तौर पर विपक्ष को यह बड़ी शिकायत रहती है, चाहे कोई भी विपक्ष में हो, कि उनकी तरफ कम ध्यान दिया जाता है। मैं यहां पर बताना चाहता हूं कि आम तौर पर राइट की तरफ और सेंटर की तरफ ज्यादा नज़र जाती है, लेफ्ट की तरफ कम जाती है। हालांकि लेफ्ट वाले तो सेंटर में हैं, लेकिन लेफ्ट की तरफ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। यह ऐसा सदन है कि जहां हम सब मिलकर देश के हित में काम करते हैं और जिसमें माननीय चेयरमैन हों या डिप्टी चेयरमैन हों या कोई भी चेयरपर्सन हो, उसका हमेशा प्रयास रहता है कि सभी लोगों को बोलने का अवसर मिले, बड़े ग्रुप को भी, सरकार को भी, विपक्ष को भी और छोटे से छोटे दल के नेताओं को भी और जो नॉमिनेटेड हैं या एक-एक आदमी है, क्योंकि हम सब यहां पर बराबर हैं, सभी मेम्बर्स ऑफ पार्लियामेंट बराबर हैं।

महोदय, मैं आज इनको अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से बधाई देते हुए यही अपेक्षा करता हूं कि माननीय डिप्टी चेयरमैन पूरी तरह से सक्षम हैं इस सदन की कार्यवाही को चलाने के लिए, जब माननीय चेयरमैन कुर्सी पर नहीं होंगे और वे सभी के साथ बराबर का इन्साफ करेंगे। मैं एक बार फिर से आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد) :** آنریبل چیئرمین سر، میں اپنی طرف سے اور اپنی پارٹی کی طرف سے شری ہری ونش جی کو ڈپٹی چیئرمین بننے پر بہت بہت بدھائی دیتا ہوں۔ وہ دوسری دفعہ اس سدن کے ڈپٹی چیئرمین بنے ہیں اور پچھلے کچھ سالوں سے ہم نے دیکھا ہے کہ بہت کم وقت میں اس عہدے پر رہ کر انہوں نے سبھی پارٹیوں کے جو پرتی-ندھی اس سدن میں ہیں، ان کے ساتھ نیائے کرنے کا پورا پریاس کیا ہے۔ یہ بہت ہی بڑے ودوان ہیں، لیکھک ہیں اور جو اس فیلڈ سے آتے ہیں، ان کے لئے سبھی برابر ہوتے ہیں۔ مجھے پورا وشواس ہے کہ آنے والے وقت میں بھی وہ تینوں طرف دائیں، بائیں اور سینٹر پر دھیان دیں گے۔ عام طور پر وپکش کو یہ بڑی شکایت رہتی ہے، چاہے کوئی بھی وپکش ہو، کہ ان کی طرف کم دھیان دیا جاتا ہے۔ میں یہاں پر بتانا چاہتا ہوں کہ عام طور پر رائٹ کی طرف اور سینٹر کی طرف زیادہ نظر جاتی ہے، لیفٹ کی طرف کم جاتی ہے۔ حالانکہ لیفٹ والے تو سینٹر میں ہیں، لیکن لیفٹ کی طرف زیادہ دھیان دینے کی ضرورت ہے۔ یہ ایسا سدن ہے کہ جہاں ہم سب مل کر دیش کے ہت میں کام کرتے ہیں اور جس میں مانئے چیئرمین ہوں یا ڈپٹی چیئرمین ہوں یا کوئی بھی چیئرپرسن ہوں، اس کا ہمیشہ پریاس رہتا ہے کہ سبھی لوگوں کو بولنے کا موقع ملے، بڑے گروپ کو بھی، سرکار کو بھی، وپکش کو بھی اور چھوٹے سے چھوٹے دل کے نیتاؤں کو بھی اور جو نومنیٹڈ ہیں یا ایک ایک آدمی ہیں، کیوں کہ ہم سب یہاں پر برابر ہیں، سبھی ممبرس آف پارلیمنٹ برابر ہیں۔

مہودے، میں آج ان کو اپنی طرف سے اور اپنی پارٹی کی طرف سے بدھائی دیتے ہوئے یہی امید کرتا ہوں کہ مانئے ڈپٹی چیئرمین پوری طرح سے سکشم ہیں اس سدن کی کاروائی کو چلانے کے لئے، جب مانئے چیئرمین کرسی پر نہیں ہوں گے اور وہ سبھی کے ساتھ برابر کا انصاف کریں گے۔ میں ایک بار پھر سے آپ کو بہت بہت بدھائی دیتا ہوں۔

---

† Transliteration in Urdu script.

श्री सभापति: धन्यवाद। श्री देरेक ओब्राईन।

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, on behalf of my party and everyone else here, congratulations and a very warm welcome. आज तो "हिन्दी दिवस" है। आज शुभ दिन है और आप एक महान पत्रकार भी हैं। This is a good day you have got re-elected as the Deputy Chairman. Harivanshji and I have a long history of being neighbours, like today he is sitting on a temporary seat and I am also sitting on a temporary seat. Then again, he comes from Bihar and I come from Bengal. So, again we are neighbours. He started his career as a journalist with *Ravivar*. I started my career in the room next to this from the same publication. So, we were neighbours from then, even though he is much senior to me. Harivanshji, we wish you well. You are one of those unique people who have had the opportunity and the experience to be in two of the four important pillars of democracy, the media and the Parliament. So, Sir, we made a speech like this in August two years ago when you were elected, and I would just repeat what I said then that the media and Parliament are two important pillars of democracy, I wish him well that he would do all it takes to protect these important pillars. Good health and happiness to you and everyone else in your family, Sir. Thank you.

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): सभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

महोदय, मैं सबसे पहले तो श्री हरिवंश जी को राज्य सभा का उपसभापति चुने जाने पर हार्दिक बधाई देता हूं। दो विशेषताएं व्यक्ति के व्यक्तित्व को बड़ा बनाती हैं, हम पिछले दिनों से देखते रहे हैं कि हरिवंश जी में वे दो बहुत प्रमुख विशेषताएं हैं। एक तो वे विद्वान हैं और दूसरे बहुत विनम्र हैं। जब व्यक्ति विनम्र होता है, तो स्वाभाविक रूप से लोगों के आदर का पात्र बन जाता है। इस कुर्सी पर बैठकर भी जो सम्मान की दृष्टि से देखा जाए उसके लिए सदन को चलाना बहुत आसान हो जाता है। मुझे उम्मीद है कि इनकी विनम्नता को और इन्होंने पिछले दिनों जिस तरीके से हाउस चलाया है, उसको देखते हुए सदन के सभी पक्षों की तरफ से उन्हें पूरा सहयोग मिलेगा और उनकी दृष्टि भी सभी पक्षों की तरफ जाती रहेगी। देरेक ओब्राईन साहब ने जो कहा है कि वे बिहार से हैं, लेकिन वह उत्तर प्रदेश से हैं और बिहार का प्रतिनिधित्व करते हैं, उत्तर भारत के दो सबसे बड़े राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इस दृष्टि से भी उनका बहुत महत्व हो जाता है, इसलिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति: प्रधान मंत्री जी, क्या आप अभी बोलेंगे?

प्रधान मंत्री: जी। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: सबको मौका मिलेगा।

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): आदरणीय सभापति जी, मैं सबसे पहले तो इस व्यवस्था के लिए जो कुछ भी प्रयास किया गया है, आपको और आपकी टीम को बहुत बधाई देता हूं। मैं श्रीमान् हरिवंश जी को दूसरी बार इस सदन का उपसभापति चुने जाने पर पूरे सदन और सभी देशवासियों की तरफ से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। सामाजिक कार्यों और पत्रकारिता की दुनिया में हरिवंश जी ने जिस तरह से अपनी ईमानदार पहचान बनाई है, उस वजह से मेरे मन में हमेशा उनके लिए बहुत सम्मान रहा है। मैंने महसूस किया है कि हरिवंश जी के लिए जो सम्मान और अपनापन मेरे मन में है, इन्हें करीब से जानने वाले लोगों के मन में है, वही अपनापन और सम्मान आज सदन के हर सदस्य के मन में भी है। यह भाव, यह आत्मीयता हरिवंश जी की अपनी कमाई हुई पूंजी है। उनकी जो कार्यशैली है, जिस तरह से सदन की कार्यवाही को वे चलाते हैं, उसे देखते हुए यह स्वाभाविक भी है। सदन में निष्पक्ष रूप से आपकी भूमिका लोकतंत्र को मजबूत करती है।

सभापति महोदय, इस बार यह सदन अपने इतिहास में सबसे अलग और विषम परिस्थितियों में संचालित हो रहा है। कोरोना के कारण जैसी परिस्थितियाँ हैं, उनमें यह सदन काम करे, देश के लिए जरूरी जिम्मेदारियों को पूरा करे, यह हम सबका कर्तव्य है। मुझे विश्वास है कि हम सब सारी सतर्कता बरतते हुए, सारे दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे।

राज्य सभा के सदस्य, सभापति जी और उपसभापति जी को सदन की कार्यवाही को सुचारु रूप से चलाने में जितना सहयोग करेंगे, उतना ही समय का सही उपयोग होगा और सभी सुरक्षित भी रहेंगे।

सभापति महोदय, संसद के उच्च सदन की जिस जिम्मेदारी के लिए हरिवंश जी पर हम सबने भरोसा जताया था, हरिवंश जी ने उसे हर स्तर पर पूरा किया है। मैंने पिछली बार अपने संबोधन में कहा था कि मुझे भरोसा है कि जैसे हरि सबके होते हैं, वैसे ही सदन के हरि भी पक्ष, विपक्ष सबके रहेंगे। सदन के हमारे हरि, हरिवंश जी इस पार और उस पार, सबके ही समान रूप से रहे, कोई भेदभाव नहीं, कोई पक्ष-विपक्ष नहीं। मैंने यह भी कहा था कि सदन के इस मैदान में खिलाड़ियों से ज्यादा अंपायर परेशान रहते हैं। नियमों में खेलने के लिए सांसदों को मजबूर करना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है। मुझे तो भरोसा था कि ये अंपायरिंग अच्छी करेंगे, लेकिन जो लोग हरिवंश जी से अपरिचित थे, हरिवंश जी ने अपनी निर्णायक शक्ति, अपने फैसलों से उन सबका भी भरोसा जीत लिया।

सभापति महोदय, हरिवंश जी ने अपने दायित्व को इतनी सफलता से पूरा किया है, ये दो साल इसके गवाह हैं। सदन में जिस गहराई से बड़े-बड़े विधेयकों पर पूरी चर्चा कराई, उतनी ही तेजी से बिल पास कराने के लिए हरिवंश जी कई-कई घंटों तक लगातार बैठे रहे, सदन का कुशलता से संचालन करते रहे। इस दौरान देश के भविष्य को, देश की दिशा को बदलने वाले अनेक ऐतिहासिक बिल इस सदन में पास हुए। पिछले साल ही इस सदन ने 10 साल में सर्वाधिक productivity का रिकॉर्ड कायम किया है, वह भी तब, जब पिछला साल लोक सभा के चुनाव का साल था। यह हर एक सदस्य के लिए गर्व की बात है कि सदन में productivity

[श्री नरेन्द्र मोदी]

के साथ-साथ positivity भी बढ़ी है। यहाँ सभी खुल कर अपनी बात रख पाएँ, सदन का कामकाज नहीं रुके, स्थगन न हो, इसका निरंतर प्रयास देखा गया है। इससे सदन की गरिमा भी बढ़ी है। संसद के उच्च सदन से यही अपेक्षा संविधान निर्माताओं ने की थी। लोकतंत्र की धरती, बिहार से, जे.पी. और कर्पूरी ठाकुर की धरती से, बापू के चंपारण की धरती से जब कोई लोकतंत्र का साधक आगे आकर जिम्मेदारियों को सँभालता है, तो ऐसा ही होता है, जैसा हरिवंश जी ने करके दिखाया है।

जब आप हरिवंश जी के करीबियों से चर्चा करते हैं, तो पता चलता है कि वे क्यों इतना जमीन से जुड़े हुए हैं। उनके गाँव में नीम के पेड़ के नीचे स्कूल लगता था, जहाँ उनकी शुरुआती पढ़ाई हुई थी। जमीन पर बैठ कर जमीन को समझना, जमीन से जुड़ने की शिक्षा उन्हें वहीं से मिली हुई थी। हम सभी यह भलीभाँति जानते हैं कि हरिवंश जी, जय प्रकाश जी के ही गाँव, सिताबदियारा से आते हैं। यही गाँव जय प्रकाश जी की भी जन्मभूमि है। दो राज्यों, उत्तर प्रदेश और बिहार के तीन जिलों, आरा, बलिया व छपरा में बँटा हुआ क्षेत्र, दो नदियों, गंगा और घाघरा के बीच स्थित दियारा, टापू जैसा, हर साल जमीन बाढ़ से घिर जाती थी, बमुश्किल एक फसल हो पाती थी, तब कही सामान्य रूप से जाने-आने के लिए नदी को नाव से पार करके ही जाया जा सकता था। 'संतोष ही सुख है', यह व्यावहारिक ज्ञान हरिवंश जी को अपने गाँव की, घर की परिस्थिति से मिला। वे किस पृष्ठभूमि से निकले हैं, इसी से जुड़ा एक किस्सा मुझे किसी ने बताया था। हाई स्कूल में आने के बाद हरिवंश जी के लिए पहली बार जूता बनाने की बात हुई थी। उसके पहले उनके पास न जूते थे और न ही खरीदे थे। ऐसे में गांव के ही एक व्यक्ति, जो जूता बनाते थे, उनको हरिवंश जी के लिए जूता बनाने के लिए कहा गया। हरिवंश जी अक्सर उस बनते हुए जूते को देखने जाते थे कि कितना बना? जैसे बड़े रईस लोग, जब उनका बंगला बनता है, तो बार-बार देखने के लिए जाते हैं, उसी तरह हरिवंश जी अपना जूता कैसा बन रहा, कहां तक पहुंचा है, वह देखने के लिए पहुंच जाते थे और जूता बनाने वाले से हर रोज़ सवाल करते थे कि कब तक बन जाएगा? आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि हरिवंश जी जमीन से इतना क्यों जुड़े हुए हैं।

जे.पी. का प्रभाव उनके ऊपर बहुत ही ज्यादा था। उसी दौर में किताबों से भी उनका लगाव बढ़ता गया। उससे जुड़ा एक किस्सा भी मुझे पता चला है। हरिवंश जी को जब पहली बार सरकारी स्कॉलरशिप मिली, तो घर के कुछ लोग उम्मीद लगाए बैठे थे कि बेटा स्कॉलरशिप का पूरा पैसा लेकर घर आएगा, लेकिन हरिवंश जी ने स्कॉलरशिप के पैसे घर न ले जाने के बजाय किताबें खरीद ली। तमाम तरह की संक्षिप्त जीवनियां और साहित्य, यही वे अपने घर लेकर गए। हरिवंश जी के जीवन में उस समय में किताबों का जो प्रवेश हुआ था, वह अब भी उसी तरह बरकरार है।

सभापति महोदय, करीब चार दशक तक सामाजिक सरोकार की पत्रकारिता करने के बाद हरिवंश जी ने 2014 में संसदीय जीवन में प्रवेश किया था। सदन के उपसभापति के तौर पर

हरिवंश जी ने जिस तरह मर्यादाओं का ध्यान रखा, संसद सदस्य के तौर पर भी उनका कार्यकाल उतना ही गरिमापूर्ण रहा है। बतौर सदस्य, तमाम विषयों, चाहे वे आर्थिक हों या सामरिक सुरक्षा से जुड़े विषय, हरिवंश जी ने अपनी बात प्रभावी ढंग से रखी थी। हम सब जानते हैं कि शालीन, लेकिन सारगर्भित ढंग से बात रखना उनकी पहचान है। सदन के सदस्य के तौर पर उन्होंने अपने उस ज्ञान, अपने उस अनुभव से देश की सेवा का पूरा प्रयास किया है। हरिवंश जी ने सभी अंतरराष्ट्रीय पटलों पर भारत की गरिमा, भारत के क़द को बढ़ाने का काम भी किया है, चाहे वे Inter-Parliamentary Union की तमाम बैठकें हों या फिर दूसरे देशों में भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के तौर पर भूमिका का निर्वाह हो, हरिवंश जी ने ऐसी हर जगह भारत और भारत की संसद का मान बढ़ाया है।

सभापति महोदय, सदन के उपसभापति की भूमिका के अलावा हरिवंश जी राज्य सभा की कई समितियों के अध्यक्ष भी रहे हैं। ऐसी तमाम समितियों के अध्यक्ष के तौर पर हरिवंश जी ने समितियों के कामकाज को बेहतर बनाया है, भूमिका को प्रभावी ढंग से रेखांकित किया है। मैंने पिछली बार भी बताया था कि हरिवंश जी कभी बतौर पत्रकार - 'हमारा सांसद कैसा हो', यह मुहिम चलाते रहे हैं। सांसद बनने के बाद उन्होंने इस बात के लिए भरपूर प्रयत्न किया है कि सभी सांसद अपने आचार, व्यवहार से और कर्तव्यनिष्ठ बनें।

सभापति महोदय, हरिवंश जी संसदीय कामकाज और जिम्मेदारियों के बीच भी एक बुद्धिजीवी और विचारक के तौर पर भी उतना ही सक्रिय रहते हैं। आप अभी भी देशभर में जाते हैं, भारत की आर्थिक, सामाजिक, सामरिक और राजनीतिक चुनौतियों के बारे में जन-मानस को जागृत करते हैं। इनके अंदर का पत्रकार, लेखक ज्यों का त्यों बना हुआ है। इनकी किताब हमारे पूर्व प्रधान मंत्री, श्रीमान् चन्द्रशेखर जी के जीवन को बारीकी से उभारती है, साथ ही हरिवंश जी की लेखन क्षमता को भी प्रस्तुत करती है। इस सदन का और सभी सदस्यों का सौभाग्य है कि उपसभापति के रूप में हमें हरिवंश जी का मार्गदर्शन आगे भी मिलेगा।

माननीय सभापति जी, संसद का यह उच्च सदन 250 सत्रों से आगे की यात्रा कर चुका है। यह यात्रा लोकतंत्र के तौर पर हमारी परिपक्वता का प्रमाण है। एक बार फिर से हरिवंश जी आपको इस महत्वपूर्ण और बड़ी जिम्मेदारी के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं। आप स्वस्थ रहें और सदन में भी स्वस्थ माहौल बनाये रखते हुए एक उच्च सदन से जो उम्मीदें हैं, उसे पूरा करते रहें। हरिवंश जी को मुकाबला देने वाले मनोज झा जी को भी मेरी तरफ से शुभकामनाएं। लोकतंत्र की गरिमा के लिए चुनाव की यह प्रक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हमारा बिहार भारत की लोकतांत्रिक परम्परा की धरती रहा है। वैशाली की उस परम्परा को, बिहार के उस गौरव को, उस आदर्श को हरिवंश जी इस सदन के माध्यम से और परिष्कृत करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

मैं सदन के सभी सम्मानित सदस्यों को चुनाव की इस प्रक्रिया में शामिल होने के लिए धन्यवाद अर्पित करता हूं। एक बार फिर से हरिवंश जी को, सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई। धन्यवाद।

SHRI PRASANNA ACHARYA (Odisha): Sir, I join others in this House in congratulating Harivanshji. For the last two years when he was the Deputy Chairman of the House, we have seen him how with all honesty and all sincerity and with utmost impartiality, he has been, in your absence, conducting this House very, very nicely. We are all impressed with his ability, his good manners and his deep knowledge about parliamentary procedures. As everybody knows and as hon. Prime Minister was mentioning, he spent his entire life in journalism and, usually, journalists look upon things from different angles. So, he being a very reputed journalist all his life, usually, we hope that when he will be conducting the House, his eyes will be in all corners of the House and on all Members of the House, irrespective of which Party a Member belongs, either a big party, a major party or a small party. Sir, I think, while being the Deputy Chairman of the House, he has been very sincerely following your guidelines because you are very particular and your eyes are always on each and every one of us when you are conducting the House and you very well observe who is a bit naughty, who is bound with duty and which Member is a bit fighty. So, likewise, Sir, Hon. Deputy Chairman, Harivanshji is also following your line.

Sir, I was very surprised and I was very happy to learn this morning that Manoj Jhaji has also filed his nomination. Both of them are very great friends and very old friends, and they have worked together in political field for a pretty long time even for decades and have travelled widely in Bihar and in U.P. during election time. They have shared their meals, they have shared their rooms and they are very, very good friends. So, I take this opportunity to also compliment Manoj Jhaji. Sir, Manoj Jhaji has written a letter to all the hon. Members and I want to guote one line from his letter where he says that constructive political opposition is not just about numbers but it is a critical and moral force in the nation. Very rightly said. Sir. So, I also compliment Manoj Jhaji for keeping this democratic tradition high, and I congratulate and I compliment our Deputy Chairman, Sir, also. I hope that with all his experience, he will very dignifiedly conduct the House as he did before also. With this. Sir, I once again compliment the hon. Deputy Chairman. Thank you.

DR. K. KESHAVA RAO (Telangana): Sir, let me first, at the outset, congratulate Harivanshji. He is not new to the House, nor to the Members nor he is new to us. He has won our hearts; he has won the heart of the House. So, congratulations again. I am really tempted as Acharyaji said. He has picked up one sentence to guote to you from Manojji's letter. I have picked up another sentence which is very relevant. by all

means. Rajya Sabha, Sir, as we know, is a House of States and is a forum for articulation of federal concerns at the Centre. Sir, it will make a strong statement in favour of an accountable system of governance, which we and Shri Harivansh should help us achieve, a system in which regional parties that have formed State Governments do not have to depend on *quid pro quo* with the party in power at the Centre.

Sir, along with these words, there is one thing that I would like to say. Shri Manoj Jha is a very valued rival. It is very nice of him that he has agreed to approve only a voice vote instead of pressing the buttons here. He has very magnanimously said that he has no numbers — whether those numbers are important or not in a democracy — and so we would depend on them here. Both the Members are not just good friends and erudite Members but they have also been socialists. I do not know what Shri Harivansh believes in today but nonetheless, they started their careers as socialists.

Sir, since this is a Hindi Day, I am only quoting you now. I am one of those protagonists who have been a votary of Hindi right from the school days and you know that very well. We have taken upon our shoulders the '*angrezi hatao*' movement for Hindi. But having come here, as you are the Chairman of the Rashtrabhasha Committee, I have said there and I am raising it again here. This is very important, both for Shri Harivansh and the House. We want Hindi to be spoken here, not Sanskrit to be propagated here, so that we understand language. We, in the South, do not understand Hindi as well as you do, but we love Hindi more than you do. My only point is, we must be able to understand what you are trying to say. Sir, you have yourself said, सरल हिन्दी यूज़ कीजिए, दूसरी यूज़ मत कीजिए, हिन्दुस्तानी यूज़ कीजिए, so that this House becomes meaningful to most of us, at least one-third of this House, which would be able to understand it. I thought this was an important point to make on the Hindi Day.

My congratulations once again to Shri Harivansh. Thank you. Sir.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, I congratulate the Deputy Chairman, Shri Harivansh. As the hon. Prime Minister has said, he is a renowned journalist. All of us know that he turned around the newspaper Prabhat Khabar into one of the most selling newspapers and made investigative journalism his forte in his journalistic career. As the Deputy Chairman, he is known to this House very well. The success and performance of the Deputy Chairman or Chairman depends upon the fair balance that they are able to maintain between the Treasury Benches and the Opposition Benches and the fair decisions that they take while conducting the House.

[Shri V. Vijayasai Reddy]

Sir, he brings the same qualities of leadership when he occupies the position of Deputy Chairman of Rajya Sabha. All of us saw how he fared in his last term. It was an exemplary performance by him while rendering justice to the smaller and regional parties like ours, the YSR Congress, when he gave them a patient hearing.

With these words, I congratulate him once again and I am very confident that he would do justice to this august House as the Deputy Chairman of this House.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, on behalf of my Party, the DMK, I, Tiruchi Siva, congratulate Shri Harivansh, who has been elected as the Deputy Chairman of this august House consecutively for the second term.

Sir, he is a prolific writer, a reputed journalist and has the credit of having a very close association with the former Prime Minister, Shri Chandrashekhar.

Sir, whenever I have had an opportunity to interact with him personally, I came to know of his depth of knowledge which spreads across various fields. He has become the custodian of this august House along with you, Sir, and his responsibility is to uphold the dignity and decorum of the House as well as to protect the rights of the Members.

I wish to submit at this moment that during his earlier term sometimes we found it very hard to draw his attention even to raise a point of order. So, making use of this opportunity, I would like to say that we expect him as friendly in the Chair as he is in the Chamber. Ours is an august House. Parliament is temple of democracy. Whatever we do here sets apart all the other arms of democracy. It is a House of deliberation and the opportunities have to be distributed both to the ruling party and the opposition parties. Whenever we want to say something and the Chair listens to us, it would, of course, make it easier to convey what we want to. I again congratulate Shri Harivansh, who is a well-qualified person, to be in the Chair of the Upper House of the Parliament, the largest democracy in India. I very much expect him in the coming days to uphold its dignity and further up his performance.

SHRIMATI VANDANA CHAVAN (Maharashtra): Mr. Chairman, Sir, on behalf of the Nationalist Congress Party, I wish to congratulate Harivanshji, once again, on being elected and for donning the Chair, as the Deputy Chairman of the tallest House of democracy. We have had the opportunity to see and hear Harivanshji as an extremely

eloquent and passionate Member of our House since 2014 and then as an extremely able Deputy Chairman since 2018. Harivanshji has been a prolific writer. He was a journalist who turned round the newspaper Prabhat Khabar. He has a lot of books to his credit. Harivanshji has had the great fortune to have worked with very prominent leaders like former Prime Minister, Chandra Shekharji and thereby imbibed the socialist ideologies promoted by tall leaders like Jayaprakash Narayanji and Rammanohar Lohiaji. Harivanshji has been humility personified. He has been extremely kind and courteous in his two years as Deputy Chairman and I am sure those qualities will remain undeterred always. I once again congratulate Harivanshji on his donning Deputy Chairman's position. Thank you.

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह (बिहार): सभापति महोदय, सबसे पहले मैं हरिवंश जी को पुन: उपसभापति पद पर चुने जाने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसके साथ ही माननीय प्रधान मंत्री जी को और एनडीए के जितने हमारे नेता हैं, जिन्होंने हरिवंश जी को दोबारा इस पद पर कार्य करने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं उनके प्रति अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से और अपनी पार्टी के नेता नीतीश बाबू की तरफ से आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही आज यहाँ पर एक बहुत ही अच्छा सुखद अवसर देखने को मिला और वह यह कि इसके लिए वोटिंग नहीं हुई। दोनों उम्मीदवार हमारे बिहार से ही थे, एक जनता दल(यू) से थे और एक राष्ट्रीय जनता दल से थे। सब लोगों को लगा कि आज क्या होगा? आज बहुत अच्छा हुआ कि सब लोगों ने मिल करके हरिवंश जी को फिर से यहाँ काम करने का मौका दिया।

हरिवंश जी के बारे में आप सब जानते हैं, उनका जो व्यक्तित्व है, उनका जो कृतित्व है और सबसे बड़ी बात है जो उनका वक्तृत्व है, जिस प्रकार से वे बात करते हैं, इसके बारे में आप सब जानते हैं। आप सब अवगत हैं कि उनका जो गाँव सिताबदियारा है, वह जेपी का गाँव है। इनका संबंध झारखंड से भी है, बिहार से भी है और अपनी पार्टी यानी जनता दल(यू) में हमारे साथ प्रशिक्षण में इन्होंने जो काम किया है, वह सराहनीय है। अभी करीब-करीब 16 दिनों तक लगातार हमारे हज़ारों कार्यकर्ताओं को गाँधी जी के बारे में, जेपी के बारे में और लोहिया जी के बारे में तथा उनकी विचारधारा से अवगत कराया। आप सब जानते हैं कि विचारधारा कार्यकर्ता को बताना बहुत आसान काम नहीं होता है, लेकिन हरिवंश जी जिस प्रकार से बातों को रखते हैं, वे बहुत गंभीर बातों को, जो चिंतन के विषय होते हैं, उनको भी बहुत साफ से रखते हैं। इसलिए मुझे भरोसा है कि हरिवंश जी को फिर से इस पद पर कार्य करने का जो मौका मिला है, जो उनका व्यक्तित्व है, जो उनका शालीन व्यवहार है, उसमें सब लोगों को साथ लेकर वे इस सभा का संचालन करेंगे और हम लोग यहाँ ज्यादा से ज्यादा काम कर पाएँगे, यही हम उम्मीद करते हैं और यहाँ पर जितने साथियों ने उनको इस पद पर चुने जाने के लिए सहयोग किया, मैं उनके प्रति फिर से आभार प्रकट करता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): सर, मैं खड़ा हो जाऊँ, खड़े होने की इजाज़त है?

श्री सभापति: नहीं, अभी खड़े होने का समय पूरा हो गया, चुनाव भी हो गया।

प्रो. मनोज कुमार झा: सभापति महोदय, आपका, हमारे सदन के सभी सहयोगियों, विपक्ष-सत्ता पक्ष सबका बहुत-बहुत शुक्रिया। सर, जो माननीय उपसभापति महोदय चयनित हुए हैं, हरिवंश जी, यह मामला कभी भी दो व्यक्तियों का नहीं था और कभी भी मामला व्यक्तियों का नहीं होना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति-विमर्श में मुद्दे छूट जाते हैं। दो प्रस्थापनाओं के बीच की बात थी, अच्छा हुआ कि हमने मध्य रास्ते में रुककर यह तय किया कि यहाँ एक मिलन मंदिर है, जहाँ बातचीत हो सकती है। यह लोकतंत्र की सबसे खूबसूरत चीज़ है।

सर, एम.सी. छागला, हमारे शिक्षा मंत्री थे, jurist थे। उन्होंने एक किताब लिखी, वह उनकी autobiography है, 'Rose in December'. हम politics में अकसर कहते हैं, our politics is an art of possible. वे इसको challenge करते हैं, politics should be an art of impossible. हमने क्या किया कि possibilities के चक्कर में lowest hanging fruit को पकड़ा और राजनीति उसी के इर्द-गिर्द हो रही है। मैं पुन: अपने तमाम साथियों, विपक्ष-सत्ता पक्ष को धन्यवाद देता हूँ। अहमद फ़राज़ कहते हैं,

"तू मोहब्बत से कोई चाल तो चल,
हार जाने का हौसला है मुझे"

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): सम्माननीय चेयरमैन सर, मैं अपनी तरफ से, मेरी पार्टी शिवसेना की तरफ से हमारे मित्र हरिवंश जी के इस उच्चतम सदन के उपसभापति चयनित होने पर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। हम आज की चुनाव प्रक्रिया देख रहे थे, आज का चुनाव बहुत ही सहज और सरल तरीके से हो गया। हमारे हरिवंश जी का स्वभाव भी इतना ही सरल और सहज है, तो यह आनन्द की बात है। हमारे सहयोगी, मनोज झा जी ने भी बहुत sportingly यह चुनाव लड़ा।

सर, दूसरी बात यह है कि "हिन्दी दिवस" का एक महत्व होता है, आपने भी उसका ज़िक्र किया और आज उपसभापति पद के लिए जो हरिवंश जी का चयन हुआ है, वह "हिन्दी दिवस" का भी सम्मान है। हरिवंश जी ने अपनी पूरी जिंदगी हिन्दी भाषा, हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी लेखन को समर्पित की है, हिन्दी की सेवा की है, भाषा की सेवा की है, तो उनका चयन इसलिए भी महत्वपूर्ण है। वे बिहार से आते हैं, वहाँ उनकी राजनीति की पाठशाला है और बिहार में तो राजनीति की सबसे बड़ी पाठशाला है। वहाँ उन्होंने पत्रकारिता का भी काम किया, लेकिन मुझे याद है, हम बात भी करते हैं कि हरिवंश जी ने पत्रकारिता के बहुत से महत्वपूर्ण साल मुम्बई में भी निकाले हैं, मुम्बई में भी काम किया है और हमने देखा है कि बहुत ही शालीनता से पत्रकारिता की है।

6.00 P.M.

सर, मैंने इस व्यक्ति को हमेशा देखा कि ये जब भी सदन के उच्च पद पर बैठे हैं, इन्होंने विनम्रता से काम किया, संयम से किया है। हरिवंश जी ने न्याय के तराजू को बहुत संयमता और विनम्रता से संभाला। मैंने उनको कभी हताश होते हुए नहीं देखा। सदन में चाहे कितना भी हंगामा हो, लेकिन मैंने उन्हें कभी हताश या उनमें चिड़चिड़ापन आया, यह मैंने देखा नहीं है। यह बहुत महत्वपूर्ण बात होती है और इसलिए मैं आज फिर एक बार उनके चयन के लिए बधाई देता हूँ। आप अपने नेतृत्व में इस सदन की गरिमा जरूर बढ़ाएंगे और इस सदन को और प्रतिष्ठा देंगे।

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश): ऑनरेबल चेयरमैन सर, सबसे पहले मैं अपनी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी एवं अपनी तरफ से तथा बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष, बहन कुमारी मायावती जी की तरफ से श्री हरिवंश जी को दोबारा इस पद पर आसीन होने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

जब वे इतने वर्षों से इस सीट पर बैठे हुए थे और जब वे इस सीट पर बैठते हैं, तो हम लोगों ने हमेशा देखा कि रूल्स, रेगुलेशंस उनकी टिप्स पर रहते हैं, जिनसे संचालन की जरूरत होती है। इतना ही नहीं, सख्ती करते समय भी वे इस बात का जरूर ध्यान रखते हैं कि सख्ती सत्ता पक्ष या अपोज़िशन में जो मेन पार्टी है, उसके ऊपर किस तरह से करनी है और जो छोटे दल हैं या जिन पार्टीज़ के इस समय कम नंबर्स हैं, उनके साथ कैसे करनी है। समय खत्म होने पर भी, न-न करते हुए भी उन्होंने हमारे जैसे लोगों को हमेशा प्रोत्साहन दिया और कहा कि अपनी बात खत्म कर लीजिए, शीघ्र खत्म कर लीजिए, लेकिन अपॉर्चुनिटी दी। उनके व्यक्तित्व के बारे में सभी ने कहा है, उसे दोबारा कहने की जगह मैं सिर्फ इतना ही कहूँगा कि एक जर्नलिस्ट होने के साथ-साथ, एक स्टेट्समैन होने के साथ-साथ वे बड़े ही शालीन हैं। एक ऐसा शालीन व्यक्ति, जिसका व्यक्तित्व अपनी छवि की एक अलग छाप छोड़ देता है। हमें पूरी उम्मीद है कि जैसे उन्होंने इस सदन का पहले संचालन किया, अबकी बार उसी प्रकार से हम लोगों को और इस सदन को, जो कि इस देश का उच्च सदन है, इसकी गरिमा जो उन्होंने अपने पिछले कार्यकाल में बढ़ाई है, उसको और आगे बढ़ाने का काम करेंगे।

अंत में, मैं प्रोफेसर झा साहब के बारे में जरूर कहूँगा कि वे भी एक बहुत ही लर्नेड आदमी हैं। यह एक अच्छी बात थी कि ये दोनों ही इस सदन के लर्नेड लोग थे। कोई जीतता है, कोई हारता है, यह तो डेमोक्रेसी का एक पार्ट है, इसलिए इसमें कोई ऐसी बात नहीं है।

मैं पुन: अपनी पार्टी की तरफ से और स्वयं की तरफ से श्री हरिवंश जी को इस पद पर दोबारा चुने जाने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, धन्यवाद।

PROF. ELAMARAM KAREEM (Kerala): Sir, on behalf of my party, the Communist Party of India (Marxist), I take this opportunity to congratulate Shri Harivansh ji for having been elected as the Deputy Chairman of this House.

[Shri Prof. Elamaram Kareem]

Sir, as an experienced politician and as an experienced Parliamentarian, I hope, he can uphold the legacy and glorious dignity of this House. In democracy, there may be dissent. Earlier, hon. Chairman said, agree to disagree is the essence of democracy. The dissent voice also should get due consideration. It is the Council of States. All respected Members are representing different States. They may have different views on each and every issue.

I hope, with the experience that he gained as the Deputy Chairman earlier, he will uphold and protect the democratic right of all the Members.

Finally, I take this opportunity to compliment Professor Manoj Jha also. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Binoy Viswam. Where is he? You are at the top now. Please speak.

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, but the number is the lowest.

श्री सभापति: मगर विनय होना चाहिए।

SHRI BINOY VISWAM: I represent a small party, number-wise, but I represent a cause, I represent an ideology, and, I believe that in parliamentary democracy, that too has a space. I have noted in this House that the Chairman and the Deputy Chairman, in my belief, try to accommodate the views presented by the Opposition too, however small in numbers.

Now, I would like to repeat the words of my comrade, Elamaram Kareem. It is the sentence that you often repeat here. Agreement in disagreement, and, you said that this is the beauty of democracy. This House has taught us to uphold that beauty. I believe that after a glorified contest, a dignified contest, Shri Harivansh ji has become the Deputy Chairman of this House once again, and, I am very sure that with his experience, with his down-to-earth character, his wisdom and his emergence from the socialist school of Chandrasekhar will help him run this House in a proper way. Finally, I would like to congratulate our friend Manoj Kumar Jha also for the way in which he contested this election. Thank you very much, Sir.

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली): मान्यवर, सबसे पहले मैं श्री हरिवंश जी को आम आदमी पार्टी की ओर से लोकतंत्र के इस सबसे बड़े मंदिर में उपसभापति के रूप में चयनित

किए जाने पर हार्दिक बधाई देता हूं और अपने मित्र प्रो. मनोज कुमार झा जी को भी हृदय से बधाई देता हूं कि जिस तरह से आज उन्होंने अपनी सौम्यता, सहजता का परिचय दिया और चुनाव की कोई नौबत नहीं आयी। मान्यवर, यह लोकतंत्र की खूबसूरती है और इसी शक्ति से लोकतंत्र मज़बूत होता है, इसी आचरण से लोकतंत्र मज़बूत होता है। आदरणीय हरिवंश जी ने हम सबको हमेशा एक अभिभावक के रूप में सदन में बोलने का मौका दिया। हम लोगों ने सीमाओं का अतिक्रमण किया तो रोका-टोका, लेकिन मौका भी दिया। इसके लिए भी मैं उनका ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूं और उम्मीद करता हूं कि गांधी, लोहिया और जय प्रकाश जी के जिन विचारों को लेकर वे जीवन में आगे बढ़े हैं, लोकतंत्र के इस मंदिर में भी उस प्रकाश को हमेशा बिखेरने का काम करेंगे। मैं पुन: एक बार हरिवंश जी को आम आदमी पार्टी की ओर से उपसभापति के रूप में चयनित किए जाने पर हार्दिक बधाई देता हूं।

SHRI G.K. VASAN (Tamil Nadu): Sir, I thank you for giving me this opportunity. I thank you for giving chance to small parties. We all understand that we are in the gallery today because of the pandemic situation and we have to follow social distancing. That will give great confidence to all the Members, especially the new Members and the Members who are sitting in the Lok Sabha. On behalf of my party and on my own behalf, I would like to thank hon. Chairman and I would like to congratulate Mr. Deputy Chairman. It gives great confidence to all the Members. We all know his functioning in the first leg. He treated everybody equally. He gave equal rights to everybody. I congratulate him on behalf of the Tamil Maanila Congress (Moopanar). Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Shri Ramdas Athawale, please be brief. I have other Business and everything has to be closed before 7 o'clock.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले): सभापति महोदय, आज का दिन हमारे लिए लोकतंत्र को मज़बूत करने वाला दिन है। हरिवंश बाबू जी को आज दूसरी बार उपसभापति चुनने का मौका इस सदन को मिला है। आज एकमत से उपसभापति पद पर हमारे हरिवंश बाबू का चयन हुआ है।

"रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया की ओर से मैं उनको हमेशा रखूंगा याद,
मैं देता हूं हरिवंश बाबू को धन्यवाद।"
मैं उनको धन्यवाद देता हूं और मुझे बहुत उम्मीद और आशा है कि:-
"जिस तरह माननीय वेंकैया नायडु जी
और हरिवंश बाबू की थी दो हंसों की जोड़ी,
इसलिए सही दिशा में चल रही थी राज्य सभा की गाड़ी।
मुझे मालूम है इन दोनों की नाड़ी, इसलिए मैंने बढ़ाई है दाढ़ी।।"

आपने और हरिवंश बाबू ने जब-जब मुझे...**(व्यवधान)**...

श्री संजय राउत : आप गलत नाम ले रहे हैं, रघुवंश बाबू नाम ले रहे हैं।

श्री रामदास अठावले : मैं हरिवंश बाबू ही नाम ले रहा हूं।

"जब-जब आपने और हरिवंश बाबू ने मुझे दे दिया था बोलने का मौका,
तब-तब मैंने मार दिया था चौका।"

"कभी-कभी मैं मारता था छक्का,
और मैं दे देता था विरोधी दलों को धक्का।"

आपने मुझे बहुत बार मौका दिया है। मेरी पार्टी छोटी है, लेकिन यह बाबा साहेब अम्बेडकर जी की पार्टी है और यह लोकतंत्र को मजबूत करने वाली पार्टी है। बाबा साहेब ने संविधान के मुताबिक राज्य सभा और लोक सभा चलती है, इसलिए ज्यादा वक्त न लेते हुए, मैं हरिवंश जी को हार्दिक बधाई देता हूं और शुभकामनाएं भी देता हूं, जय भीम, जय भारत।

SHRI S.R. B ALASUB RAMONIYAN (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, I felt that I will be failing in my duty if I don't welcome and congratulate him. I think Mr. Derek said that he was his neighbour. He was my neighbour too. When he moved to the seat next to me, he was immediately elected as Deputy Chairman. Somebody spoke about seeing only right and centre and not on the left side. It is true that sometimes, some horses cannot see the other side because blinkers are put. Some horses with blinkers won't see. They will be running hither and thither. But, here, once they are on blinkers, their run will be much different and immediately, they will score. In the same way, I know Mr. Harivansh; he was my neighbour. He is mild mannered and soft spoken. As a person, he is one of my best friends. He is a fit person to be your deputy. He will definitely follow the rules. I expect him to be fair to all the parties. I think he will perform his duty perfectly. I welcome him. On behalf of my party, I assure him our complete support. Thank you.

सरदार बलविंदर सिंह भुंडर (पंजाब): ऑनरेबल चेयरमैन साहब, श्री हरिवंश जी को दूसरी बार राज्य सभा का डिप्टी चेयरमैन चुने जाने पर, मैं शिरोमणि अकाली दल की तरफ से बधाई देता हूं। क्योंकि टाइम बहुत कम रह गया है, इसलिए मैं एक लाइन में यह कहना चाहता हूं कि जो इनका चेहरा है, Face is the index of mind. इनका चेहरा बताता है कि शांति स्वभाव, उच्च-कोटि के विद्वान, धरती नाल जुड़े होए और जय प्रकाश नारायण जी, जिन्हांने बचपन तू लेके पहली अज़ादी दी लड़ाई, दूजी दी लड़ाई ते अपणे आखरी सांस त्यागे, उस धरती तो आए ने, वो भी डेमोक्रेसी वास्ते सारी जिंदगी लड़े। इन्हां दा भी एही है कि बचपन तो लड़े हैं और जो प्रधान मंत्री जी ने दो मिसालां दित्तीयां, बड़ी बरीकी नाल इन्हां दी लाइफ बारे, वो दसदियां हैं कि कितना ये धरती नाल जुड़े होए और इसी करके आज सारां नूं प्यार नाल और रूलिंग

पार्टी ने दूसरी बार नॉमिनेट किया है, इसलिए सबने प्यार से इनको सहयोग दिया है। मैं श्री हरिवंश जी को बधाई देता हूं और जो डेमोक्रेसी का सिस्टम है कि सभी को प्यार से साथ लेना और सभी को देना, ये पहले भी निभाते हैं, आगे भी निभाएंगे, मैं इनको दोबारा फिर बधाई देता हूं।

सभा के नेता (श्री थावरचन्द गहलोत): माननीय सभापति महोदय, माननीय हरिवंश जी के दोबारा राज्य सभा के उपसभापति चुने जाने के इस शुभ अवसर पर, सारा सदन प्रफुल्लित है। मैं इन्हें अपनी ओर से और पूरे सदन की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं कि वे फिर से उपसभापति निर्वाचित हुए हैं। जैसा कि सर्वविदित है, हमारे उपसभापति जी प्रखर बुद्धिजीवी हैं, कलम के धनी हैं और कर्मठ राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। आपने विभिन्न दायित्वों का निर्वहन समय-समय पर किया है और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन का कोई भी पहलू आप से अछूता नही रहा है। आपने हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। हम सभी ने निश्चिय ही यह अनुभव किया है कि सदन के कार्य संचालन द्वारा आपका व्यवहार सदस्यों के प्रति समयपयोगी और अत्यधिक सहयोगात्मक रहा है। आपका मार्ग-दर्शन खास तौर से नए सदस्यों को संसदीय कार्य प्रणाली के विविध आयामों से प्रभावी रूप से परिचित कराएगा। सदस्य के रूप में भी आप सदन की विभिन्न समितियों में सक्रियता से भागीदारी करते रहे हैं तथा सार्थक और प्रभावी योगदान देते रहे हैं। आदरणीय श्री हरिवंश जी का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही अनुकरणीय हैं और इनके गरिमामय व्यक्तित्व से संसद के उच्च सदन के सम्मान और कीर्ति में श्रीवृद्धि होगी। मैं आपको और सदन को कोटिश: धन्यवाद देता हूं और याद दिलाता हूं कि कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी और कठोर परिश्रम से जिस प्रकार से आपने पहले सदन की कार्यवाही उत्कृष्ट तरीके से संचालित की, उसी तरह आगे भी ऐसा ही संचालन करने का प्रयास करते रहेंगे। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं करते हुए फिर से मैं एक बार बधाई देता हूं, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: I extend my heartiest congratulations to Harivanshji on his re-election as the Deputy Chairman. His re-election stands testimony to his wide acceptability across the parties and his competence in conducting the House. I would also like to compliment Prof. Manoj Kumar Jha for the sporting spirit he has shown. We, the House together, have clearly exhibited such camaraderie. But in a democracy, there would be contest, there would be proposition and opposition but at the end of the day, we are all together. Under such a spirit, the House has elected you. I do not want to speak at length because as today is the first day, I want the other Business also to be completed. Hon. Prime Minister has elaborately introduced you to the new Members also. There are more than forty two new Members, who have been elected. It would be very useful for them also to know you better. Of course, the old Members have the experience also.

I rarely see Harivanshji, without a smile on his face. That is a great quality in conducting the proceedings of the House in spite of even the grave provocations at

[MR. Chairman]

times. I once again extend my best wishes to Harivanshji. I am sure he continues to serve this august House with the same zeal, tenacity and vigour that is worthy of stature and dignity of this House. I wish him all the success for the Office he is going to adorn and for the second time in a row.

The Deputy Chairman may thank the Members for their feelings.

श्री उपसभापति: आदरणीय माननीय सभापति जी, आपके प्रति आभार और माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद। मैं इस अवसर पर बिहार के मुख्यमंत्री जी का स्मरण करना चाहूंगा। मैं नेता सदन, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्ढा जी और माननीय नेता प्रतिपक्ष समेत सभी दल के नेताओं और हरेक माननीय सांसद के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। सभापति जी, जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जब शब्द साथ छोड़ देते हैं। रामायण में कई ऐसे प्रसंग हैं, जब तुलसीदास जैसे समर्थ महाकवि ने कहा कि माननीय इंद्रियां असमर्थ हैं, तो वे भगवान शिव से प्रार्थना करते हैं कि आप समर्थता और ताकत दें कि मैं जो कहना चाहता हूं, कह सकूं। मेरी स्थिति कुछ ऐसी ही है। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति किस तरह से अपनी कृतज्ञता, आभार और धन्यवाद व्यक्त करूं। आपकी मेरे प्रति उदारता, दृष्टि, मेरे पास इनके लिए शब्द नहीं हैं। संसदीय जीवन से पहले आपसे परिचय नहीं रहा। मैं ऐसे गांव और पृष्ठभूमि से आया, जिसके बारे में आदरणीय चन्द्रशेखर जी ने लिखा है कि 1951-52 में जब पहली बार विद्यार्थी के रूप में वे जे.पी. से मिलने उस गांव गए, तो कोई रास्ता नहीं था। गांव के करीब पहुंचे, तो वहां घास काट रहे एक बुजुर्ग से उन्होंने पूछा कि जे.पी. का घर यहां से कितनी दूर है? उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि मैं अपने टोले के आस-पास आजीवन घास काटता रहा, उधर पूरब गया ही नहीं। बमुश्किल उस गांव से जे.पी. का घर तीन किलोमीटर दूर था। मैं उस गंगा और घाघरा दोनों नदियों के बीच इस दियारे बाढ़ से अभिशप्त जीवन से निकला। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं जय प्रकाश जी के गांव सिताबदियारा का रहने वाला हूं। वहां पीढ़ियां जन्मती थी और गुजर जाती थी और वहां से बाहर नहीं निकल पाती थी। ऐसे गांव के एक अति सामान्य परिवार से बिना अंग्रेज़ी स्कूलों की शिक्षा के इस महान संस्था का महत्वपूर्ण दायित्व देने योग्य आप सबने मुझे समझा, उसके लिए मैं आप सब के प्रति कृतज्ञ हूं।

इसके लिए मैं आभार व्यक्त करना चाहूंगा, बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी का, जिन्होंने दुबारा मुझे इस गौरवमयी संस्था का हिस्सा बनने का मौका दिया। सिर्फ मौका ही नहीं, लगातार फोन करके जो लोकतांत्रिक चुनावी प्रक्रिया है, उस पर वे चर्चा करते रहे। मैं सन् 2014 में जब इस सदन में पहली बार आया तो जो राजनीतिक मर्यादा, तहज़ीब, वेल में न जाने और संयमित आचरण करने की बात सीखी, विनम्रता सीखी, वह माननीय नीतीश जी की देन है। मुझे दुबारा प्रत्याशी बनाने और पग-पग पर मेरा ध्यान रखने में जिनका स्नेह मिला, माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्ढा जी, शिरोमणि

अकाली दल से श्री नरेश गुजराल जी समेत इस सदन के नेता, अत्यंत शालीन श्री थावरचन्द गहलोत जी, उपनेता श्री पीयूष गोयल जी, संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रहलाद जोशी जी, संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री वी.मुरलीधरन जी, लोक जनशक्ति पार्टी से केन्द्रीय मंत्री माननीय रामविलास पासवान जी, जनता दल (यूनाइटेड) के सदन में नेता माननीय राम चन्द्र प्रसाद सिंह जी - इन सबका स्नेह मुझे हमेशा मिलता रहा है। शिरोमणि अकाली दल के सदन में नेता सरदार बलविंदर सिंह भुंडर जी - इन सबके प्रति मैं आभार और कृतज्ञता अर्पित करता हूं। एआईएडीएमके के सदन के वरिष्ठ नेता माननीय ए.नवनीतकृष्णन जी, माननीय एस.आर.बालासुब्रमण्यम जी, बीजू जनता दल के सदन में नेता और हमारे वरिष्ठ साथी और मित्र माननीय प्रसन्न आचार्य जी, टीआरएस के सदन में नेता माननीय डा. के.केशव राव जी, बीएसपी के सदन में नेता माननीय सतीश चन्द्र मिश्रा जी, शिवसेना के हमारे मित्र श्री संजय राउत जी, आम आदमी पार्टी के श्री संजय सिंह जी, माननीय जी.के.वासन जी, माननीय रामदास अठावले जी और जैसा मैंने बताया, हमारे मित्र श्री देरेक ओब्राईन साहब - इन सभी का मैं आभारी हूं। जब मैं नया-नया आया तो एक सदस्य के रूप में यहां पीछे बैठता था। तब मैंने सदन में कहा था कि नेता, प्रतिपक्ष श्री गुलाम नबी आज़ाद जी को बोलते हुए जब भी मैं सुनता हूं तो बहुत कुछ सीखता हूं। कैसे संसदीय मर्यादा और शिष्टता के साथ सृष्ट आलोचनात्मक बातें भी कही जा सकती हैं। माननीय शरद पवार जी, माननीय तिरुची शिवा जी, पुन: माननीय देरेक ओब्राईन जी, माननीय राम गोपाल यादव जी - अगर समय होता तो इनमें से एक-एक व्यक्ति की खूबियां मैं बताता। श्री इलामारम करीम जी, माननीय बिनोय विस्वम जी - सभी सदस्यों का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं। मैं बैठता था, माननीय सुखेन्दु शेखर राय जी के साथ। उनकी शालीनता और समय के तहत प्रतिबद्धता के साथ अपनी बात कहना मैंने उनसे भी सीखा। मेरे मित्र, माननीय मनोज कुमार झा जी तय समय में अपनी तथ्यपूर्ण बातें रखते हैं। उन्होंने मुझे फोन किया, मैं उनकी इजाज़त से व्यक्तिगत बात बताना चाहता हूं, जो उम्मीदवार बने। मुझे अच्छा लगा क्योंकि संसद की जो मैंने गरिमा पढ़ी है - पृथ्वी कामत जी इसी संसदीय प्रणाली के बड़े वरिष्ठ सदस्य थे। मध्य प्रदेश में जब वे एक बार चुनाव लड़ रहे थे, तो उनके एक सहायक को एक बड़ी पार्टी ने उनके खिलाफ खड़ा किया। तो जब दोनों आमने-सामने मिलते थे तो बताते थे कि आपकी कहां कमी है और आपकी कहां कमी है। दोनों को अगर गाड़ियों की कोई परेशानी होती थी तो वे एक-दूसरे को गाड़ी देते थे- कुछ इस तरह का माहौल रहा। इसलिए मैं प्रो. मनोज कुमार झा जी को बहुत धन्यवाद देता हूं।

महोदय, इस अवसर पर अगर मैं माननीय अरुण जेटली जी का स्मरण न करूं तो वह मेरे प्रति खुद अन्याय होगा। मैं सदन में नया था, मेरा कोई परिचय नहीं था, लेकिन कुछ लोगों के भाषण मुझे बहुत आकर्षित करते थे। उनमें से एक अरुण जी थे। अरुण जी की विद्वता, उनकी बातचीत, स्मृति और प्रखर व्यक्तित्व - सिर्फ वही आकर्षित नहीं करता था बल्कि उन्हें जब भी मैं सुनता था तो गांधी जी का एक प्रसंग याद आता था। गांधी जी ने देश के एक बड़े चोटी के नेता को कहा कि आप बड़े तेजस्वी हैं, बड़े शालीन हैं, बड़ी कम उम्र में आपने पीएचडी की है, लेकिन अगर शालीनता नहीं है, तो कम से कम आप सामाजिक जीवन में तो काम नहीं कर पाएंगे। अरुण जेटली जी में मैंने अद्भुत शालीनता देखी। मैं प्रणब बाबू से मिलता था। उन्होंने

[श्री उपसभापति]

मुझे एक प्रसंग सुनाया। जब मैं पहली बार सदस्य बनकर आया तो उन्होंने एक वरिष्ठ सदस्य का नाम लिया और मुझे सुझाव दिया कि आप हमेशा संसद में बैठें क्योंकि बैठकर आप बहुत कुछ सीखेंगे। अनेक माननीय सदस्य हैं जो सुबह से शाम तक यहां बैठते हैं। माननीय सभापति जी, सदन में नेता, प्रतिपक्ष एवं सभी विपक्षी दलों के नेताओं का इस कारण भी धन्यवाद कि मेरे पूर्व कार्यकाल में उनका भरपूर मार्गदर्शन, स्नेह और सहयोग मिला।

आदरणीय सभापति जी, यह बात अधूरी रहेगी अगर इस क्रम में मैं माननीय सभापति जी का उल्लेख न करूं। सर, सभी माननीय सदस्यगणों से मैं बताना चाहूंगा कि जब मेरा पहला कार्यकाल था तो इस गरिमामयी संस्था या सदन को चलाने की मर्यादा उंगली पकड़कर माननीय चेयरमैन साहब ने मुझे सिखायी। सदन की उच्च मर्यादा, काम का निष्पादन और स्व अनुशासन मैंने उनसे सीखा। मैं जहां लड़खड़ाया, उन्होंने आगे बढ़कर संभाला, प्रोत्साहित किया और मनोबल बढ़ाया। मैं उनसे हमेशा सीखता हूं। उनका एक standing instruction रहा कि संसदीय मर्यादा, नियम और कानून के तहत यहां पर श्रेष्ठ बहस हो। उनके काम-काज और लेखन मुझे स्तब्ध करते हैं। उनमें शब्दों के चयन की प्रतिभा अद्‌भुत है। उनमें मुहावरा गढ़ने, लिखने और नए विचारों के प्रति तत्परता है। उनसे बहुत कुछ सीखा है। मैं उनका भी आभार व्यक्त करता हूं। इस उच्च सदन के सचिवालय, सेक्रेटरी जनरल, समस्त अधिकारीगण, मार्शलगण के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूं। पिछले कार्यकाल में जो भी काम अच्छा हो पाया, उन सबका का श्रेय उन सबको है। कमियां मेरी रहीं। सर, दो मिनट और इजाज़त दें, तो मैं दो चीज़ और कहना चाहूंगा।

श्री सभापति: जी, बोलिए।

श्री उपसभापति: इस क्षण के बाद मेरी भूमिका, जिस जगह आपने और इस सदन ने मुझे अवसर दिया, हमारे अद्‌भुत लोक देवता गणेश जी के बताए रास्ते पर है। वेद व्यास अदभुत ग्रंथ महाभारत की रचना कर रहे थे। महर्षि व्यास से गणेश जी का यह एग्रीमेंट हुआ, करार हुआ कि वे लिखेंगे, पर महर्षि ने कहा कि आप बीच में कुछ बोलेंगे नहीं। गणेश जी ने कहा कि ठीक है, आप बीच में रुकेंगे तो मैं पुस्तक की रचना छोड़ दूंगा। नए संदर्भ में यह भूमिका इस सदन में है। महाभारत की जगह दोनों सदनों में देश के नए सृजन का इतिहास लिखने का गौरव इन दोनों सदनों को है। रुल्स प्रोसीज़र के तहत मिलकर बहस का समय आप निर्धारित करते हैं। माननीय चेयरमैन साहब जिसकी स्वीकृति देते हैं, आप सब उस सीमा का पालन करते हैं। लोक देवता गणेश जी की श्रृंखला में आसन को मौन होकर सुनना पड़ता है। देश-दुनिया आपकी बातों से समृद्ध होती है। सदन द्वारा तय समय सीमा का जब हम अतिक्रमण करते हैं, तभी आपने आसन को बोलने का दायित्व सौंपा है। बोलने के मौके से आप मुझे बचाएंगे, यह मेरा विश्वास है।

अंत में, मैं यह कहना चाहूंगा कि आज पूरी दुनिया एक अद्‌भुत संकट से गुजर रही है। हम सब लोग एक गंभीर चुनौती के बीच मिल रहे हैं, पर हर संकट अवसर देता है। इस कोविड-19 कोरोना में भारत की अंदरूनी ताकत और अदभुत क्षमता का हमें अहसास हुआ है। The Indian

Council of Medical Research (ICMR) के डाक्टर बलराम भार्गव ने 28 जून को, आज से काफी पहले, देश को बताया कि एक माह पहले देश में कोविड-19 टैस्ट की क्षमता 555 लेबोरेटरीज़ में कुल एक लाख थी, पर अब हर दिन दो लाख टैस्ट हो रहे हैं। अब देश के हर जिले में लेबोरेटरीज़ हैं, जो कि कुल एक हजार हैं। इस तरह कोविड-19 के लिए swab kits का स्थानीय उत्पादन शुरू हो, यह कोशिश हुई। आज तीन कंपनियां प्रतिदिन दो लाख swab kits स्वयं बना रही हैं। लॉकडाउन के बावजूद VTM Kit, Virus Collection Swab Kit का उत्पादन वर्ष में पांच लाख होता था, अब प्रतिदिन पांच लाख हो रहा है। याद रखें कि उनके लेख से मैं ये जून के आंकड़े बता रहा हूं। सितम्बर में ये आंकड़े बहुत बढ़ चुके हैं, पर लॉकडाउन की विपरीत परिस्थितियों में यह कैसे हुआ? Central Drub Standard Control Organisation ने निवेश प्रस्तावों को तेज गति से स्वीकृति दी और व्यवस्था में गति आई। एक निजी कंपनी ने 10 मिलियन PCR, Polymerase Chain Reaction टैस्ट और पांच मिलियन Viral Extraction Kits बनाईं। यह सब अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में हुआ। यह भारत की क्षमता है, पर इस क्षमता का सम्पूर्ण उपयोग कैसे हो, बेहतर उपयोग कैसे हो, इसमें संसद और इस सदन की बड़ी भूमिका है। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि 2016 में Kurzweil ने कहा कि अपने जीवन काल में हम 20 हजार वर्षों की प्रगति देखने वाले हैं। वह दुनिया के अग्रणी आविष्कारक हैं, चिंतक और futurist हैं। उनका आकलन सटीक माना जाता है। The Wall Street में उन्हें 'restless genius' माना, तो Forbes पत्रिका ने 'the ultimate thinking machine'. Kurzweil ने कहा कि biotechnology और nanotechnology हमें क्षमता देते हैं कि हम मानव शरीर और आसपास के संसार को आण्विक molecular स्तर पर बदल दें। वह कह चुके हैं 'the singularity is near'. Computing क्षमता में अनंत वृद्धि और लागत खर्च में भारी कमी से, जो artificial intelligence सृजित होगा, वह अरबों गुना मानव इन्टेलिजेंस से समृद्ध होगा। अब इस दौर में किस तरह से इस तरह के बदलाव मानव द्वार पर दस्तक दे रहे हैं, यह सदन के सोचने और विचार विमर्श का बेहतर समय है। भारत इस बदलाव के बीच अपनी प्रतिभा व क्षमता से कैसे शीर्ष पर पहुंचे?

अंत में, मैं एक चीज़ और कह कर अपनी बात खत्म करूंगा। दुर्भाग्यवश सदन का माहौल कभी-कभी डिस्टर्ब होता है। इस संदर्भ में मेरे लिए उपसभापति के रूप में All India Speakers' Conference में भाग लेना और सुनना बड़ा ज्ञानवर्धक रहा। पूरे देश के स्पीकर्स, जहां अलग-अलग राज्य सरकारें हैं, उन्होंने बार-बार कहा कि हमें इन व्यवधानों के बारे में जितना संभव हो मिलकर रास्ता निकालना चाहिए। यह सदन भी सामूहिक रूप से ऐसे प्रसंगों पर विचार करेगा, क्योंकि तेजी से बदलती दुनिया में समय और अवसर किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। हमें अपने सदन के संविधान निर्माताओं की मंशा एवं आज के समय की मांग के अनुसार चलना होगा। सभापति जी, मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वर्तमान सदन ने इस काम को आपके मार्गदर्शन में बखूबी किया है और आप में से एक-एक माननीय सदस्य के सहयोग से आगे भी कर सकता है।

सर, संविधान सभा में सेकंड चैम्बर पर चर्चा हो रही थी, तो यह अपेक्षा थी कि हड़बड़ी में कानून न बने। इसमें इस सदन की महत्वपूर्ण भूमिका हुई। साथ ही श्री गोपालस्वामी अयंगर

[श्री उपसभापति]

ने संविधान सभा के Second Chamber से संबंधित आर्टिकल को स्वीकार करते समय जो भाषण दिया, उसमें उन्होंने कहा, "I think, on the whole, balance of consideration is in favour of having such a Chamber and taking care to see that it does not prove a clog either to legislaition or administration." यह संतुलन हमें मिलकर कायम करना है। मैं पुनः कहूंगा कि आप सबके सौजन्य से यह दायित्व मुझे मिला है, इसके लिए मैं आभारी हूं। श्री गोदे मुराहरी ने जब यह पद संभाला, तो उन्होंने कहा था कि उन्हें डर लग रहा है। ऐसी हालत मेरी भी है। मैं ऐसे लोगों के बीच हूं, जिनका संसदीय जीवन बहुत लम्बा और समृद्ध है, परन्तु वही मेरी ताकत है। जब भी ऐसे क्षण पहले भी आए और आगे भी आएंगे, रूल्स और प्रोसीजर से कैसे आगे बढ़ें, वही सारे माननीय लोग मिलकर हमें रास्ता बताते हैं।

सर, अंत में प्रख्यात तमिल कवि संत तिरुवल्लुवर, जिन्होंने तिरुक्कुरुल का सृजन 2000 वर्ष पहले किया, उन्होंने कहा, "Nothing is impossible for those who act after wise counsel and careful thought." यह वॉयस काउंसिल के लिए सदन बना, यह वरिष्ठों का सदन देश की गंभीर से गंभीर चुनौतियों पर मिलकर कामयाब होगा, यह क्षमता इसमें है। मैं पुन आप सब का आभार प्रकट करता हूं और धन्यवाद देता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति: अभिनंदन हरिवंश जी। Now, the Government Motion. Shri Pralhad Joshi to move the Motion.

GOVERNMENT MOTION

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS; THE MINISTER OF COAL; AND THE MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI):

Sir, with your permission, I move the following motion:—

"Keeping in view that the current Session of Rajya Sabha is being held in extraordinary circumstances prevailing due to COVID-19 pandemic reguiring maintenance of social distancing and keeping the movement of Government officials and others within the Parliament precincts to the bare minimum, this House resolves that Starred Questions and Private Members' Business may not be brought before the House for transaction during the Session, and all relevant Rules on these subjects in the Rules of Procedure and Conduct of Business in Rajya Sabha may stand suspended to that extent".

The question was proposed.